जयगळु आगलि अपजयगळु होगलि

जयदेवी रमणा ओलियलि कॊले
जयदेवी रमणा ओलियलि नम्म।
विजयरायर कीर्ति मरेयलु कॊले
दसरायर कीर्ति मेरेयलु कोले ॥

हरिये सर्वोत्तम हरिये परदेवते
हररदासरेंबॊ बिरुदन कॊले
हररदासरेंबॊ बिरुदन कॊले हेक्काले
हिरिबागिलोळगे नुडिसेवु कॊले ॥

पन्नंग शयन सुपर्ण वाहन
सुपर्ण वाहन सुखपूर्ण कॊले ।
सुपर्ण वाहन सुखपूर्णनाद
मोहन विठ्ठल करणिसु कॊले ॥

कॊले कॊले रंग कॊलु कॊले
कॊले कॊले कृष्ण कॊलु कॊले ॥

मोदल् वन्दिपे

मोदल् वन्दिपे निनगे गणनाथ

बन्द विघ्न कळेयो गणनाथ

मोदल् वन्दिपे निनगे गणनाथ ॥प॥

हिन्दे रावणनु मददिन्द निन्न पूजिसदे

सन्द रणदल्लि गणनाथ ॥१॥

माधवन आज्ञेयिन्द धर्मराय पूजिसलु

साधिसिद राज्य गणनाथ ॥२॥

मन्गळ मूरुति गुरु रंगविथलन पाद

हिंगदे पालिसो गणनाथ ॥३॥

श्री जगन्नाथदासार्य विरचित श्री हरिकथाम्रुतसर

१. मंगळाचरण सन्धि

हरिक-थामृत — सार-गुरुगळ ।

करुण-दिंदा — पनितु-पेळुवे ।

परम-भगवद् — भक्त-रिदना — दरदि-केळुवु-दु ॥ प ॥

श्रीर-मणि कर — कमल- पूजित ।

चारु- चरण स — रोज- ब्रह्म स- ।

मीर- वाणि फ — णींद्र- वींद्र भ — वेंद्र- मुख विनु-त ॥ नीर-ज भवां — डोद-य स्थिति ।

कार-णने कै — वल्य-दायक ।

नार-सिंहने — नमिपे-करुणिपु — दॆमगॆ-मंगळ-व ॥ १-१ ॥

जगदु-दरनति — विमल-गुणरू- ।

पगळ-नालो — चनदि- भारत ।

निगम-ततिगळ — तिक्र-मिसि क्री — या वि-शेषग-ळ ॥

बगॆ- बगॆय-नू — तनव- काणुत ।

मिगॆ- हरुष-दिं — पॊगळि- हिग्गुव ।

त्रिगुण-मानि म — हाल-कुमि सं — तैस-लनुदिन-वु ॥ १-२ ॥

निरुप-मानं — दात्म-भव नि- ।

र्जर स-भा सं — सेव्य- ऋजु गण- ।

दरसॆ- सत्व — प्रचुर-वाणी — मुख स-रोजे-न ॥

गरुड- शेष श — शांक- दळ शे- ।

खरर- जनक ज — गद्गु-रुवॆ त्व- ।

च्चरण-गळिगभि — वंदि-सुवॆ पा — लिपुदु- सन्मति-य ॥ १-३ ॥

आरु- मूरॆर — डॊंदु-साविर ।

मूरॆ-रडु शत — श्वास- जपगळ ।

मूरु-विध जी — वरॊळ-गब्जज — कल्प- परियं-त ॥

ता र-चिसि सा — त्वरिगॆ-सुख सं- ।

सार- मिश्ररि — गधम- जनरिग- ।

पार- दुःखग — ळीव-गुरु पव — मान- सलहॆ-म्म ॥ १-४ ॥

चतुर- वदनन — राणि- अतिरो- ।

हित-विमल वि — ज्ञानि- निगम ।

प्रतति-गळिगभि — मानि-वीणा — पाणि- ब्रह्मा-णि ॥

नतिसि- बेडुवॆ — जननि- लक्ष्मी- ।

पतिय- गुणगळ — तुतिपु-दकॆ स- ।

न्मतिय- पालिसि — नॆलॆसु-नी मद् — वदन- सदनद-लि ॥ १-५ ॥

कृति-रमण-प्र — द्युम्न – नंदनॆ ।

चतुर-विंशति — तत्व-पति दे- ।

वतॆग-ळिगॆ गुरु — वॆनिसु-तिह मा — रुतन- निजप-त्नि ॥ सतत-हरियलि — गुरुग-ळलि स- ।

द्रतिय-पालिसि — भाग-वत भा- ।

रत पु-राण र — हस्य-तत्वग — ळरुपु-करुणद-लि ॥ १-६ ॥

वेद-पीठ वि — रिंचि- भव श- ।

क्रादि- सुर वि — ज्ञान- दायक ।

मोद- चिन्मय — गात्र-लोक प — वित्र- सुचरि-त्र ॥ छेद- भेद वि — षाद- कुटिलां- ।

तादि- मध्य वि — दूर- आदा- ।

नादि- कारण — बाद-रायण — पाहि- सत्रा-ण ॥ १-७ ॥

क्षितियॊ-ळगॆ मणि — मंत- मॊदला- ।

दति दु-रात्मरु — ऒंद-धिक विं- ।

शति कु-भाष्यव — रचिसॆ- नडुमनॆ — यॆंब- ब्राह्मण-न ॥ सतिय- जठरदॊ — ळवत-रिसि भा- ।

रति र-मण म — ध्वाभि-धानदि ।

चतुर-दश लो — कदलि-मॆरेद — प्रतिम-गॊंदिसु-वॆ ॥ १-८ ॥

पंच- भेदा — त्मक प्र-पंचकॆ ।

पंच- रूपा — त्मकनॆ- दैवक ।

पंच- मुख श — क्रादि-गळु किं — कररु- श्रीहरि-गॆ ॥ पंच- विंशति — तत्व- तरतम ।

पंचि-कॆगळनु — पेळ्द- भावि वि-।

रिंचि- यॆनिपा — नंद-तीर्थर — नॆनॆवॆ-ननुदिन-वु ॥ १-९ ॥

वाम-देव वि — रिंचि-तनय उ- ।

मा म-नोहर — उग्र- धूर्जटि ॥

साम-जाजिन — वसन- भूषण — सुमन-सोत्तं-स ॥ काम-हर कै — लास- मं-दिर ।

सोम-सूर्या — नल वि-लोचन ।

कामि-तप्रद — करुणि-सॆमगॆ स — दा सु-मंगळ-व ॥ १-१० ॥

कृत्ति-वासनॆ — हिंदे- नी ना- ।

ल्वत्तु- कल्प स — मीर-नलि शि- ।

ष्यत्व- वहिसखि — ळाग-मार्थग — ळोदि- जलधियॊ-ळु ॥ हत्तु- कल्पदि–तपव- गैदा- ।

दित्य-रॊळगु — त्तमनॆ-निसि पुरु- ।

षोत्त-मन परि — यंक- पदवै — दिदॆयॊ- महदे-व ॥ १-११ ॥

पाक-शासन — मुख्य- सकल दि- ।

वौक-सरिगभि — नमिपॆ- ऋषिगळि- ।

गेक-चित्तदि — पितृग-ळिगॆ गं — धर्व- क्षितिपरि-गॆ ॥

आ क-मलना — भादि- यतिगळ ।

नीक-कानमि — सुवॆनु- बिडदॆ र- ।

माक-ळत्रन — दास-वर्गके — नमिपॆ-ननवर-त ॥ १-१२ ॥

परिम-ळवु सुम — नदॊळ-गनलनु ।

अरणि-यॊळगि — प्पंतॆ- दामो- ।

दरनु- ब्रह्मा — दिगळ- मनदलि — तोरि- तोरद-लॆ ॥

इरुति-ह जग — न्नाथ- विठलन ।

करुण- पडॆव मु — मुक्षु- जीवरु ।

परम- भागव — तरनु- कॊंडा — डुवुदु- प्रतिदिन-वु ॥ १-१३ ॥

॥ इति श्री मंगळाचरण सन्धि संपूर्णं ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

बारय्य वॆन्कटरमण

बारय्य वॆन्कटरमण भक्तर निधियॆ (प)

तोरो निन्नय दय तोय जाम्बकनॆ (अ.प)

वेद गोचर बारो आदि कच्चप बारो मोदसूकर बारो सदया नरसिम्ह बारो (च.१)

वामन भार्गव बारो रामक्रश्णनॆ बारो प्रेमद बुद्धनॆ बारो स्वामि कल्कि नी बारो (च.२)

अरविन्द नाभ बारो सुरर प्रभुवे बारो पुरुहूत वन्द्य बारो पुरन्दर विट्टल्ल बारो (च.३)

बन्दनॊ गोविन्द

बन्दनॊ गोविन्द चन्ददि आनन्द

सुन्दरिय मन्दिरक्कॆ नन्दनकन्दा नन्दनकन्दा ॥

सुन्दराकार नन्द कन्द गन्ϐईर इन्दु वदनॆयर मुखगळिन्द नोडिद ।

तन्द कुसुमा करदिन्द मुडिसिद बन्दनो गोविन्दनो अरविन्द नयन ॥

काननादल्लि बलुदीननागलि वेणुनादवो ता कूडिमोदवो ॥

जाणनिवनु सुम बाण पितनु

मानिनि मन गळॊलियुव गान माडुत्ता ॥

ओडि बन्दरो बलु बेडिकॊन्डरो गारुडिकारनु अवर नोडि मॆरॆदरॊ ल्

माडिद जाल वासुदेव विट्तला

माडिद मन माडिद ता कूडिद नागा ॥

वीर सिंहनॆ

राग – नाटि ताळ – ध्रुव

वीर सिंहनॆ नारसिंहनॆ दय पारा

वारनॆ भय निवारण निर्गुण

सारिदवर संसार वृक्षद मूल

बेररिसि कीळुव बिरिदु भयंकर

घोरवतार कराळवदन अ-

घोर दुरित संहार मायाकार

क्रूरदैत्यर शोक कारण उद्भव

ईरेळु भुवन सागरदॊडेय

अरौद्रनामक विजय विठ्ठल नरसिंग

वीरर सातुंग कारुण्यपांग || १ ||

ताळ – मट्ट

मगुवनु रक्कसनु हगलिरुळु बिडदॆ

हगॆयिंदलि हॊय्दु नगपन्नग वनधि

गगन मिगिलाद अगणित बाधियलि

नॆगॆदु ऒगदु सावु बगॆदु कॊल्लुतिरलु हे

जगद वल्लभने सुगुणानादिगनॆ

निगमा वंदिदतॆ पॊगळिद भकुतर

तगलि तॊलगनॆंदू मिगॆ कूगुतलिरलु

युग युगदॊळु दयाळुगळ देवरदेव

युगादि कृतनामा विजय विठ्ठल हो हो

युगळ करव मुगिदु मगुवु मॊरॆ इडलु || २ ||

ताळ – रूपक

केळिदाक्षणदलि लालिसि भक्तन्न मौळि वेगदलि पालिसुवॆनॆंदु

ताळिसंतोषव तूळि तुंबिदंते

मूलोकदपतिवालयदिंद सु

स्तील दुर्लभ नाम विजय विठ्ठल पंच

मौळि मानव कंभ सीळि मूडिद देव || ३ ||

ताळ – झंपे

लटलटा लटलटा लटकटिसि वनजांड

कटह पट पट पुटुत्कटदि बिच्चुतलिरलु

पुट पुट पुटनॆगॆदु चीरिहारुत्त प-

ल्कटाकटा कट कडिदु रोषदिंद

मिटि मिटि मिटनॆ रक्ताक्षियल्लि नोडि

तटित्कोटि ऊर्भटगॆ अर्भटवागिरलु

कुटिल रहित व्यक्त विजय विठ्ठल शक्त

दिटि निटिल नेत्र सुरकटक परिपाला || ४ ||

ताळ – त्रिविडि

बॊब्बिरिये वीर ध्वनियिंद तनिगिडि

हब्बि मुंचोणि उरि हॊरगॆद्दु सुत्तॆ

उब्बस रविगागॆ अब्ज नडुगुतिरॆ

अब्धिसपुत उक्कि हॊरचॆल्लि बरुतिरॆ

अबुज भवादिगळु तब्बब्बि गॊंडारि

अब्बरवेनॆनुत नभद गूळॆयु तगॆयॆ

शब्द तुंबितु अव्याकृताकाश परियंत

निब्बर तरुगिरि झरि झरिसलु

ऒब्बरिगॊशवल्लद नम्मा विजय विठ्ठल

इब्बगॆयागि कंभदिंद पॊरमट्टा || ५ ||

ताळ – अट्ट

घडिघडिसुत कोटि सिडिलु गिरिगॆ बंदु

हॊडॆदंते चीरि बॊब्बिडुतलि लंघिसि

हिडिदु रक्कसन्न कॆडहि मडुहि तुडुकि

तॊडॆय मेलिरिसि हेरॊडल कूरुगुरदिंद

पडुवल गडल तडिय तरणिय नोडि

कडुकोपदल्लि सदबडिदु रक्कसन कॆडहि

निडिगरळनु कॊरळॆडियल्लि धरिसिद सडगरद दैव

कडुगलि भूर्भूव विजय विठ्ठल

पाल्गडलॊडॆया शरणर वडॆवॆ वडनॊडनॆ || ६ ||

ताळ – आदि

उरिमसेगे चतुर्दश धरणि तल्लणिसलु

परमेष्टि हरसुररु सिरिदेविगे मॊरेयिडलु

करुणदिंदलि तन्न शरणन्न सहित निन्न

चरणक्के ऐरगलु परम शांतनागि

हरहिदे दयवन्नु सुररु कुसुम वरुष

गरियलु भेरि वाद्य मॊरे उत्तररे ऐनुत

परिपरि वालग विस्तारदिंद कैकॊळ्ळुत्त

मेरेदु सुररुपद्र हरिसि बालकन काय्दे

परदैवे गंभीरात्म विजयविठ्ठल निम्म

चरिते दुष्टरिगे भीकरवो सज्जन पाल || ७ ||

जते

प्रह्लादवरद प्रसन्न क्लेशभंजन्न

महहविषे विजयविठ्ठल नरमृगवेषा || ८ ||

सिम्हरूपनाद श्री हरे

सिम्हरूपनाद श्री हरे हे नामगिरीशने । (प)

ऒम्मनदिन्द निम्मनु भजिपर

सम्मतदिन्द कायुव श्री हरि ॥ (अ.प)

तरळनु करॆयॆ स्थम्बवु बिरियॆ

तुम्बु उग्रव तोरिदनु ।

करुळनु बगॆदु [तन्]कॊरळॊळु इट्टु

तरळन सलहिद श्री नरसिम्हनॆ ॥ (च.१)

भक्तरॆल्ल कूडि बहु दूर ओडि

परम शान्तवनु बेडिदरु ।

करॆदु तन् सिरिय तॊडॆयॊळु कुळीसिद

परम हरुषव तॊरिद श्री हरि ॥ (च.२)

जय जय जय वॆन्दु हूवनु तन्दु

हरि हरि हरियॆन्दु सुररॆल्ल सुरिसॆ ।

भय निवारण भाग्य स्वरूपने

परम पुरुष श्री पुरन्दर विट्ठलने ॥ (च.३)

साटियुंटे

साटियुंटे श्रीनिवासन दास कूटद मेळकॆ बूटकद मातल्ल केळिरो भजनॆ माडुव ताळकॆ॥प॥

वासुदेवन वर्णिसलु कमलासनादि सुधेंद्ररु

दास जनर समूहदळॊगवासवागुत नलिवरु

सूसुतिह गंगादि नदिगळु बेसरदॆ बंदिरुवुवु केशवन कॊंडाड धरॆयॊळु मिसलळियद मधुरवु॥१॥

बारिसुत तंबूरि ताळव नारदर संस्मरिसुत

बूरि किणिकिणि मद्दळॆय जंभारि स्वरदिंदरुगुत पारिजाक्षन परम मंगळ मूरुतिय मुंदिरिसुत मारुतन मतवरितु बहु गंभीर स्वरदिंदरुगुत।२॥

हिंदॆगळिसिद हलवु दुरितवु कुंदुवुदु निमिषार्धदॆ अंदिनंदिन दोष दुष्कृत ऒंदु निल्लदु कडॆयलि इंदिराधव शेष बूधर मंदिरनु ता हरुषदि मुंदे नलियुते मनकॆ पूर्णानंदवीवनु नगुतलि॥३॥

बिडॆनो निन्नंघ्रि

बिडॆनो निन्नंघ्रि श्रीनिवास

ऎन्न दुडिसिकॊळ्ळलो श्रीनिवास

निन्न नुडिय जोतॆल्लो श्रीनिवास

नन्न नडॆ तप्पु कायो श्रीनिवास ॥१॥

बडियो बॆन्नल्लि श्रीनिवास

ऎन्न ऒडल हॊय्यदिरू श्रीनिवास

ना बडव काडेलू श्रीनिवास

निन्न ऒडल हूक्कॆनू श्रीनिवास्॥२ ॥

पंजु पिडिवेनू श्रीनिवास

निन्न ऎंजल बळिदुंबॆ श्रीनिवास

ना संजॆ उदयकॆ श्रीनिवास

काळजिय पिडिवॆ श्रीनिवास ॥३॥

सत्तिगॆ चामर श्रीनिवास

ना नॆत्ति कुणिवेनू श्रीनिवास

निन्न रत्नदाविगॆ श्रीनिवास

ना हॊत्तु नलिवेनू श्रीनिवास ॥४॥

अवरॊळिगव माळ्पॆ श्रीनिवास

नन्न पालिसो बिडदॆ श्रीनिवास

हेळिदंतागलि श्रीनिवास

निन्नगळागिवे श्रीनिवास ॥५॥

निन्न नाम होळिगे श्रीनिवास

कळ्ळ कुन्नि नानागिहे श्रीनिवास

कट्टि निन्नवरोद्दरे श्रीनिवास

ननगिन्नू लज्जेतके श्रीनिवास ॥६॥

बीसि कॊल्ललवरे श्रीनिवास

मुद्रे कासि चुच्चुलवरे श्रीनिवास

मिक्क घासिगंजेनय्य श्रीनिवास

ऍंजल बंट ना श्रीनिवास ॥७॥

हेसि नानादरे श्रीनिवास

हरिदासरूळु पॊक्के श्रीनिवास

अवर भाषॆय केळिहे श्रीनिवास

आ वासिय सैरिसू श्रीनिवास ॥८॥

तिंगळवनल्ल श्रीनिवास

वत्सरंगळवनल्ल श्रीनिवास

राजंगळ सवदिपे श्रीनिवास

भवंगळ दाटुवे श्रीनिवास ॥९॥

निन्नव निन्नव श्रीनिवास

नानन्यररिवेनू श्रीनिवास

अय्य मन्निसू तायितंदे श्रीनिवास

प्रसन्न वेंकटाद्रि श्रीनिवास ॥१०॥

गुरु जगन्नाथ दासर

॥ श्री वेंकटेश स्तवराज ॥

श्रीरमण सर्वेश सर्वद । सारभोक्त स्वतंत्र सर्वद ।

पार महिमोदार सद्गुण पूर्ण गंभीर ॥

सारिदवरघ दूरगैसि । सूरिजनरिगॆ सौख्य नीडुव ।

धीर वेंकटरमण करुणदि पॊरॆयॊ नी ऎन्न ॥ १ ॥

घन्नमहिमा पन्नपालक । निन्नहॊरतिन्नन्यदेवर ।

मन्नदलि ना नॆनेसॆनॆंदिगु बन्न बडिसदिरु ।

ऎन्नपालक नीने इरुतिॆरे इन्नु भव भयवेकॆ ऎनगॆ ।

चॆन्न वेंकटरमण करुणदि पॊरॆयॊ नी ऎन्न ॥ २ ॥

लकुमि बॊम्म भवामरेशरु । भकुति पूर्वक निन्न भजिसि

सकल लोककॆ नाथरॆनिपरु सर्व कालदलि॥

निखिळ जीवर पोरॆव देवनॆ । भकुति नीयॆनगीयदिरलु

व्यकुतवाग्यपकीर्ति बप्पदॊ श्रीनिकेतननॆ ॥ ३ ॥

याकॆ पुट्टदु करुण ऎन्नॊळु । साकलारॆय निन्न शरणन।

नूकिबिट्टॆरे निनगॆ लोकदि ख्याति बप्पुवुदे ॥

नोकनीयनॆ नीने ऎन्ननु । जोकॆयिंदलि कायो बिडदॆ ।

एकदेवनु नीने वेंकट शेषगिरिवास ॥ ४ ॥

अंबुजांबक निन्न पदयुग । नंबिकॊंड ई परियलिरुतिॆरे ।

डॊंबॆगारन तॆरदि नी निर्भाग्य स्तिति तोॆरे ॥

బింబ మూరుతి నిన్న కరగత ।కంబువరవే గతియొ విశ్వకుటుంబి ।

ఔన్నను సలహొ సంతత శేషగిరివాస ॥ ౫ ॥

సారసిరి వైకుంఠ త్యజిసి । ధారునియొళ్గొ ల్లనాగి

చోర కర్మవ మాడి బదుకిహ దారిగరికిల్ల ॥

సారి పెళువె నిన్న గుణగళ । పారవాగిరుతిహవొ జనరిగె

ధీర వేంకట రమణ కరుణది పొరెయొ నీ యెన్న ॥౬ ॥

నీర ముళుగి భార పొత్తు । ధారుణీ తళవగెదు సిట్టిలి ।

క్రూరనుదరవ సీళి కరుళిన మాలె ధరిసిదరు ॥

పోర విప్ర కుఠారి వనవన । చారి గోప దిగంబరాశ్వవ ఎరి

పోదరు బిడెనొ వేంకట శేషగిరివాస ॥౭॥

లక్ష్మీనాయక సార్వభౌమనె । పక్షివాహన పరమ పురుషనె ।

మొక్షదాయక ప్రాణజనకనె విశ్వ వ్యాపకనె ॥

అక్షయాంబరవిత్తు విజయన । పక్షపాతవ మాడి కురుగళ

లక్ష్యమాడదె కొందెయొ శ్రీ శేషగిరివాస ॥౮॥

హిందె నీ ప్రహ్లాదగోసుగ । ఎందు నోడద రూప ధరిసి ।

బందు దైత్యన ఒడల బగెదు పొరెదె బాలకన ॥

తందెతాయగళ బిట్టు విపినది । నిందు తపిసువ పంచమత్సర ।

కందనా ధ్రువనిగొలిదు పొరెదెయొ శేషగిరివాస ॥౯॥

పింతు మాదిద మహిమెగళ నా । నేంతు వర్ణిసలెను ఫల

శ్రీకాంత ఔన్నను పొరెయె కీరుతి నినగె ఫలవెనగె ॥

कंतु जनकनॆ ऎन्न मनसिन । अंतरंगदि नीनॆ सर्वद ।

निंतु प्रेरणॆ माळ्पॆ सर्वद शेषगिरिवास ॥१०॥

मडुविनॊळगिह मकरिकालनु । पिडिदु बाधिसॆ करियु त्रिजग।

द्वडेय पालिसॊ ऎनलु तक्षण बंदु पालिसिदॆ ॥

मडदि मातनु केळि बलुपरि । बडव ब्राह्मण धान्य कॊडलु ।

पॊडविगसदळभाग्य नीडिदॆ शेषगिरिवास ॥११॥

श्रीनिवासनॆ भक्तपोषनॆ । ज्ञानि कुलगळिगभयदायक ।

धीनबांदव नीने ऎन्नमनदर्थ पूरैसो ॥

अनुपमोपमज्ञान संपद। विनय पूर्वकवित्तु पालिसॊ ।

जनुम जनुमकॆमरॆय बेडवो शेषगिरिवास ॥ १२ ॥

मदवु मत्सर लोभ मोहवु । ऒदगबारदु ऎन्न मनदलि ।

पदुमनाभनॆ ज्ञान भक्तिविरक्ति नीनित्तु ।

हृदय मध्यदि निन्न रूपवु । वदनदलि तव नाममंत्रवु ।

सदय पालिसु बेडिकॊंबेनॊ शेषगिरिवास ॥ १३ ॥

अंदनुडि पुसियागबारदु । बंद भाग्यवु पोगबारदु ।

कुंदुबारदॆ निन्न करुणवु दिनदि वर्धिसलि ।

निंदॆ माडुव जनर संगवु । ऎंदिगादरु दॊरॆयबारदु ।

ऎंदु निन्ननु बेडिकॊंबेनॊ शेषगिरिवास ॥ १४ ॥

एनु बेडलि ऎन्न देवने । सानुरागदि ऎन्न पालिसॊ।

नाना विधविध सौख्य निडुवुदिह परंगळलि ।

श्रीनिवासनॆ निन्न दासगॆ । एनु कॊरॆतिलॆल्लि नोडलु ।

नीने निंतीविददि पेळिसु शेषगिरिवास ॥१५ ॥

आरु मुनिदवरेनु माळ्परॊ । आरु ऒलिदवरेनु माळ्परॊ ।

आरुनेहिगरारु द्वेशिगळारुदाशिनरु ॥

क्रूर जीवर हणिदु सात्विक । धीर जीवर पॊरॆदु निन्नलि ।

सार भकुतियनित्तु पालिसो शेषगिरिवास ॥ १६ ॥

निन्न सेवेयनित्तु ऎनगॆ । निन्न पदयुगभक्ति नीडि ।

निन्न गुणगण स्तवन माडुव ज्ञान नीनित्तु ।

ऎन्न मनदलि नीने निंतु । घन्नकार्यव माडि माडिसु ।

धन्यनॆंदेनिसॆन्न लोकदि शेषगिरिवास ॥ १७ ॥

जय जयतु शठ कूर्मरूपनॆ । जय जयतु किट सिंह वामन ।

जय जयतु भृगुराम रघुकुलसोम श्रीराम ॥

जय जयतु सिरि यदुवरेण्यनॆ । जय जयतु जनमोह बुद्धनॆ ।

जय जयतु कलिकल्मशघ्ननॆ कल्किनामकनॆ ॥ १८ ॥

करुणसागर नीने निजपद । शरणवत्सल नीने शाश्वत ।

शरण जनमंदार कमला कांत जयवंत ।

निरुत निन्ननु नुतिसि पाडुवॆ । वरद गुरु जगन्नाथविठ्ठल ।

परम प्रेमदि पॊरॆयॊ ऎन्ननु शेषगिरिवास ॥ १९ ॥

अथ द्वादशस्तोत्रेषु तृतीयस्तोत्रम्

कुरु भुङ्क्ष्व च कर्म निजं नियतं हरिपादविनम्रधिया सततम् ।
हरिरेव परो हरिरेव गुरुः हरिरेव जगत्पितृमातृगतिः ॥ १॥

न ततोऽस्त्यपरं जगदीड्यतमं (जगतीड्यतमं) परमात्परतः पुरुषोत्तमतः ।
तदलं बहुलोकविचिन्तनया प्रवणं कुरु मानसमीशपदे ॥ २॥

यततोऽपि हरेः पदसंस्मरणे सकलं ह्यघमाशु लयं व्रजति ।
स्मरतस्तु विमुक्तिपदं परमं स्फुटमेष्यति तत्किमपाक्रियते ॥ ३॥

शृणुतामलसत्यवचः परमं शपथेरितं उच्छ्रितबाहुयुगम् ।
न हरेः परमो न हरेः सदृशः परमः स तु सर्व चिदात्मगणात् ॥ ४॥

यदि नाम परो न भवेत (भवेत्स) हरिः कथमस्य वशे जगदेतदभूत् ।
यदि नाम न तस्य वशे सकलं कथमेव तु नित्यसुखं न भवेत् ॥ ५॥

न च कर्मविमामल कालगुणप्रभृतीशमचित्तनु तद्धि यतः ।
चिदचित्तनु सर्वमसौ तु हरिर्यमयेदिति वैदिकमस्ति वचः ॥ ६॥

व्यवहारभिदाऽपि गुरोर्जगतां न तु चित्तगता स हि चोद्यपरम् ।
बहवः पुरुषाः पुरुषप्रवरो हरिरित्यवदत्स्वयमेव हरिः ॥ ७॥

चतुरानन पूर्वविमुक्तगणा हरिमेत्य तु पूर्ववदेव सदा ।
नियतोच्चविनीचतयैव निजां स्थितिमापुरिति स्म परं वचनम् ॥ ८॥

आनन्दतीर्थसन्नाम्ना पूर्णप्रज्ञाभिधायुजा ।
कृतं हर्यष्टकं भक्त्या पठतः प्रीयते हरिः ॥ ९॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं
द्वादशस्तोत्रेषु तृतीयस्तोत्रं सम्पूर्णम्

अथ द्वादशस्तोत्रेषु अष्टमस्तोत्रम्

वन्दिताशेषवन्द्योरुवृन्दारकं चन्दनाचर्चितोदारपीनांसकम् ।
इन्दिराचञ्चलापाङ्गनीराजितं मन्दरोद्धारिवृत्तोद्भुजाभोगिनम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १॥

सृष्टिसंहारलीलाविलासाततं पुष्टषाड्गुण्यसद्विग्रहोल्लासिनम् ।
दुष्टनिःशेषसंहारकर्मोद्यतं हृष्टपुष्टातिशिष्ट (अनुशिष्ट) प्रजासंश्रयम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ २॥

उन्नतप्रार्थिताशेषसंसाधकं सन्नतालौकिकानन्ददश्रीपदम् ।
भिन्नकर्माशयप्राणिसम्प्रेरकं तन्न किं नेति विद्वत्सु मीमांसितम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ३॥

विप्रमुख्यैः सदा वेदवादोन्मुखैः सुप्रतापैः क्षितीशैश्चरैश्चार्च्चितम् ।
अप्रतर्क्योरुसंविद्गुणं निर्मलं सप्रकाशाजरानन्दरूपं परम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ४॥

अत्ययो यस्य (येन) केनापि न क्वापि हि प्रत्ययो यद्गुणेषूत्तमानां परः ।
सत्यसङ्कल्प एको वरेण्यो वशी मत्यनूनैः सदा वेदवादोदितः ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ५॥

पश्यतां दुःखसन्ताननिर्मूलनं दृश्यतां दृश्यतामित्यजेशार्चितम् ।
नश्यतां दूरगं सर्वदाप्याऽत्मगं वश्यतां स्वेच्छया सज्जनेष्वागतम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ६॥

अग्रजं यः ससर्जाजमग्र्याकृतिं विग्रहो यस्य सर्वे गुणा एव हि ।
उग्र आद्योऽपि यस्यात्मजाग्र्यात्मजः सद्गृहीतः सदा यः परं दैवतम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ७॥

अच्युतो यो गुणैर्नित्यमेवाखिलैः प्रच्युतोऽशेषदोषैः सदा पूर्तितः ।
उच्यते सर्ववेदोरुवादैरजः स्वर्चितो ब्रह्मरुद्रेन्द्रपूर्वैः सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ८॥

धार्यते येन विश्वं सदाजादिकं वार्यतेऽशेषदुःखं निजध्यायिनाम् ।
पार्यते सर्वमन्यैर्नयत्पार्यते कार्यते चाखिलं सर्वभूतैः सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ९॥

सर्वपापानियत्संस्मृतेः सङ्क्षयं सर्वदा यान्ति भक्त्या विशुद्धात्मनाम् ।
शर्वगुर्वादिगीर्वाण संस्थानदः कुर्वते कर्म यत्प्रीतये सज्जनाः ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १०॥

अक्षयं कर्म यस्मिन् परे स्वर्पितं प्रक्षयं यान्ति दुःखानि यन्नामतः ।
अक्षरो योऽजरः सर्वदैवामृतः कुक्षिगं यस्य विश्वं सदाऽजादिकम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ११॥

नन्दितीर्थोरुसन्नामिनो नन्दिनः सन्दधानाः सदानन्ददेवे मतिम् ।
मन्दहासारुणा पाङ्गदत्तोन्नतिं वन्दिताशेषदेवादिवृन्दं सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १२॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं
द्वादशस्तोत्रेषु अष्टमस्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीनिवासा गोविन्द

श्रीनिवासा गोविन्द । श्री वेङ्कटेशा गोविन्द ।

भक्त वत्सल गोविन्द । भागवता प्रिय गोविन्द ।

नित्य निर्मल गोविन्द । नीलमेघ श्याम गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

पुराण पुरुषा गोविन्द । पुण्डरीकाक्ष गोविन्द ।

नन्द नन्दना गोविन्द । नवनीत चोरा गोविन्द ।

पशुपालक श्री गोविन्द । पाप विमोचन गोविन्द ।

दुष्ट संहार गोविन्द । दुरित निवारण गोविन्द

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

शिष्ट परिपालक गोविन्द । कष्ट निवारण गोविन्द ।

वज्र मकुटधर गोविन्द । वराह मूर्ती गोविन्द ।

गोपीजन लोल गोविन्द । गोवर्धनोद्धार गोविन्द ।

दशरध नन्दन गोविन्द । दशमुख मर्धन गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

पक्षि वाहना गोविन्द । पाण्डव प्रिय गोविन्द ।

मत्स्य कूर्म गोविन्द । मधु सूधना हरि गोविन्द ।

वराह न्रुसिंह गोविन्द । वामन भृगुराम गोविन्द ।

बलरामानुज गोविन्द । बौद्ध कल्किधर गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

वेणु गान प्रिय गोविन्द । वेङ्कट रमणा गोविन्द ।

सीता नायक गोविन्द । श्रितपरिपालक गोविन्द ।

दरिद्रजन पोषक गोविन्द । धर्म संस्थापक गोविन्द ।

अनाथ रक्षक गोविन्द । आपध्भान्दव गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

शरणागतवत्सल गोविन्द । करुणा सागर गोविन्द ।

कमल दलाक्षा गोविन्द । कामित फलदात गोविन्द ।

पाप विनाशक गोविन्द । पाहि मुरारे गोविन्द ।

श्रीमुद्राङ्कित गोविन्द । श्रीवत्साङ्कित गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

धरणी नायक गोविन्द । दिनकर तेजा गोविन्द ।

पद्मावती प्रिय गोविन्द । प्रसन्न मूर्ते गोविन्द ।

अभय हस्त गोविन्द । अक्षय वरदा गोविन्द ।

शङ्ख चक्रधर गोविन्द । सारङ्ग गदाधर गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

विराज तीर्थ गोविन्द । विरोधि मर्धन गोविन्द ।

सालग्राम हर गोविन्द । सहस्र नाम गोविन्द ।

लक्ष्मी वल्लभ गोविन्द । लक्ष्मणाग्रज गोविन्द ।

कस्तूरि तिलक गोविन्द । काञ्चनाम्बरधर गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

गरुड वाहना गोविन्द । गजराज रक्षक गोविन्द ।

वानर सेवित गोविन्द । वारथि बन्धन गोविन्द ।

एडु कोण्डल वाडा गोविन्द । एकत्व रूपा गोविन्द ।

राम क्रिष्णा गोविन्द । रघुकुल नन्दन गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

प्रत्यक्ष देव गोविन्द । परम दयाकर गोविन्द ।

वज्र मकुटदर गोविन्द । वैजयन्ति माल गोविन्द ।

वड्डी कासुल वाडा गोविन्द । वासुदेव तनया गोविन्द ।

बिल्वपत्रार्चित गोविन्द । भिक्षुक संस्तुत गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

स्त्री पुं रूपा गोविन्द । शिवकेशव मूर्ति गोविन्द ।

ब्रह्मानन्द रूपा गोविन्द । भक्त तारका गोविन्द ।

नित्य कल्याण गोविन्द । नीरज नाभा गोविन्द ।

हति राम प्रिय गोविन्द । हरि सर्वोत्तम गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

जनार्धन मूर्ति गोविन्द । जगत् साक्षि रूपा गोविन्द ।

अभिषेक प्रिय गोविन्द । अभन्निरासाद गोविन्द ।

नित्य शुभात गोविन्द । निखिल लोकेशा गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

आनन्द रूपा गोविन्द । आद्यन्त रहित गोविन्द ।

इहपर दायक गोविन्द । इपराज रक्षक गोविन्द ।

पद्म दलक्ष गोविन्द । पद्मनाभा गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ।

तिरुमल निवासा गोविन्द । तुलसी वनमाल गोविन्द ।

शेष सायि गोविन्द । शेषाद्रि निलय गोविन्द ।

श्री श्रीनिवासा गोविन्द । श्री वेङ्कटेशा गोविन्द ।

गोविन्द हरि गोविन्द । गोकुल नन्दन गोविन्द ॥

दासनागु विशेषनागु

एसु कायंगळ कळेदु ऐंबत्नाल्कु लक्ष जीवराशियन्नु दाटि बंद ई शरीर |

तानल्ल तन्नदल्ल आसॆ थरवल्ल मुंदॆ बाहोदल्ल

दासनागु विशेषनागु दासनागु विशेषनागु||प||

आश क्लेश दोषवॆंब अब्धियॊळु मुळुगि यमन पाशक्कॊळगागदॆ निर्दोषियागु संतोषियागु

काशि वारणासि कंचि काळहस्ति रामेश्वर एसु देश तिरुगिदरॆ बाहोदेनो अल्लि होदेनो

दोष नाश कृष्णवेणि गंगॆ गोदावरि भव नाशितुंगभद्रे यमुनॆ वासदल्लि उपवासदल्लि |

मीसलागि मिंदु जप तप होम नेमगळ एसु बारि माडिदरु फलवेनु ई छलवेनु || 1 ||

अंदिगो इंदिगो ऒम्मॆ सिरिकमलेशनन्नु ऒंदु बारि यारू हिंद नॆनॆयलिल्ल मनदणियलिल्ल |

बंदु बंदु भ्रमॆगॊंडु मायामोहक्कॆ सिक्कि | नॊंदु बॆंदु ऒंदरिंद उळियलिल्ल बंध कळेयलिल्ल | संदेहव माडदिरु अरिवु ऐंब दीपविट्टु इंदु कंड्य देहदल्लि पिंडांड हागॆ ब्रह्मांड |

इंदु हरिय ध्यानवन्नु माडि विवेकदि | मुकुंदनिंद मुक्ति बेडु कंड्य नी नोडु कंड्य || 2 ||

नूरु बारि शरणु माडि नीर मुळुगल्याकॆ पर नारियर नोटकॆ गुरिय माडिदि मन सॆरॆय माडिदि | सूरॆयॊळु सूरे तुंबि मेलॆ हूविन हार गीरु गंध अक्षतॆय धरिसिदंतॆ नी मॆरॆसिदंतॆ |

गारुढिय मात बिट्टु नादब्रह्मन पिडिदु सारि सूरि मुक्तियन्नु शमनदिंद मत्ते सुमनदिंद |

नारायण अच्युत अनंतादि केशवन | सारामृतवन्नुंडु सुखिसो लंड जीववे ऐले भंड जीववे || 3 ||

पवमान पवमान

पवमान पवमान जगद प्राण संकरुषण भवभयारण्य दहन |प|

श्रवणवे मॊदलाद नवविध भकुतिय तवकदिंदलि कॊडु कविगळ प्रिय |अ.प|

हेम कच्चुट उपवीत धरिप मारुत कामादि वर्ग रहित

व्योमादि सर्वव्यापुत सतत निर्भीत रामचंद्रन निजदूत

याम यामके निन्नाराधिपुदके कामिपॆ ऎनगिदु नेमिसि प्रतिदिन

ई मनसिगॆ सुखस्तोमव तोरुत पामर मतियनु नी माणिपुदु || 1 ||

वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर दुर्जनवन कुठार

निर्जर मणिदया पार वार उदार सज्जनरघव परिहार

अर्जुनगॊलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु मूर्जगवरिवंते गर्जनॆ माडिदि

हॆज्जॆ हॆज्जॆगॆ निन्न अब्ज पादद धूळि मार्जनदलि भव वर्जितनॆनिसॊ || 2 ||

प्राण अपान व्यानोदान समान आनंद भारति रमण

नीनॆ शर्वादि गीर्वाणाद्यमररिगॆ ज्ञानधन पालिप वरेण्य

नानु निरुतदलि एनेनॆसगिदॆ मानसादि कर्म निनगॊप्पिसिदॆनॊ

प्राणनाथ सिरिविजयविठलन काणिसि कॊडुवदु भानु प्रकाश || 3 ||